Vol 4 Issue 2 Aug 2014

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-2 | Aug-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

आधुनिक हिन्दी साहित्य–लेखक स्वयं प्रकाश

सुनिता क्षीरसागर

असिस्टंट प्रोफेसर, एस. के. सोमया महाविद्यालय

सारांश :- समकालीन हिन्दी कथाकारों में स्वयं प्रकाश एक प्रतिष्ठित नाम है । उनके लेखन की बहुत बडी खूबी है – समकालीनता पर तेज लेखकीय नजर । वह अपने की गंभीर चिंताओं, समस्याओं और ज्वलंत प्रश्नों को तत्काल उत्कटता से ग्रहण कर उन पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत करते है । अपने समय के बडे और महत्वपूर्ण सवालों से वे टकराते है । उनकी सबसे बडी चिंता जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों की रक्षा की है ।

प्रस्तावना :-

स्वयं प्रकाश जी अपने 'संधान' कहानी संग्रह में अपनी यह चिंता बडी गहराई से समाविष्ट करते है । संधान से कुल चौदह कहानियाँ संकलित हैं । इन कहानियों में कथ्य की विविधता है । आधुनिक जीवन का कोई ऐसा ज्वलंत क्षेत्र और पृक्ष नहीं है, जो अछुता रह गया हो । संग्रह की पहली शीर्षक युक्त कहानी 'संधान' कहानी विधा की क्षमतों और संभावनाओं के क्षितिज खोलनेवाली कहानी है ।ध्यान को इतनी दूर तक ले जाने की क्षमता रचनाओं में विरले ही होती है । जिंदगी का लक्ष्य दु;खों को दूर करने में नहीं बल्कि कहीं और उसकी खोज में है । यह कहानी महानगरीय जीवन और कस्बाई जीवन की विशेषताओं को बखूबी रेखांकीत करती है । संसाध' इस सत्य को भी उद्‌घाटीत करती है कि हमारे पास जो है, उसको हम कैसे अनदेखा करते हैं और उससे सुख उठाने की बजाय जो हमारे पास नहीं है, ऐसी तमाम चीजों के लिए दु;खी है । इस सत्य को एक मध्यमर्गीय परिवार के माध्यम से उजागर किया गया है । कहानी के एक पात्र विश्व मोहन जी कहते हैं 'छोटे लोगों को सुख भी दुखी क्यों कर जाते हैं ? विश्व मोहन जी के घर महानगर से अचानक आए उनके मित्र का परिवार किस तरह पूरे परिवार वालों की कार्य पद्वति एवं जीवनशैली में बदलाव ला देता है, इस यथार्थ को व्यंजित करते हुए ही कहानी अपने मर्म खोलती है ।

स्वयप्रकाश ने बोध कथा और लोक कथा के प्रचलित किस्सों को नए संदभों के साथ जोडकर सामाजिक विसंगतियों ने पर भी खुनकर चोट करने का अभिनव प्रयोग किया है । इस प्रकीया में व्यंग्य के तेज स्वर सहज ही फूट पडते हैं । 'कानदांव' , गौरी का गुस्सा' और ;जंगल का दाह' जैसी अन्य कहानियाँ इसकी उदाहरण हैं । स्वयंप्रकाश जी बताते हैं, 'चाहे कुश्ती का अखाडा हो या क्रिकेट का मैदा न सभी जगह एक–सी 'फिक्सींग स्थिति है । इसी सुर व अंदाज में लिखी कहानी 'गौरी का गुस्सा' आज के मनुष्य की चूहा दौड त्रवृत्ति, ज्यादा से ज्यादा पाने की चाहत, भगवान व भाग्य आदि पर सब कुछ छोड–छोड देने, गलाकाट प्रतियोगिता जैसी भावना को दर्शाती है । अशांत जैसे पात्र के मााध्यम से इसी भावना को कहानी में रेखांकीत किया गया है । युवा पीढी के दिग्भ्रमित होने जैसी समस्या को भी यह कहानी उजागर करती है । 'जंगल का दाह' कहानी पूँजीपतियों के बढते वर्चस्व उनकी शक्ति व सत्ता के तिलिस्म को उघाडती है । शक्ति के बल से छोटे श्रमिकों से उनकी जमीन और रोजगार को पूँजीपतियों ने किस तरह छीन लिया है, किस तरह उनकी जमीनों पर बडे – बडे कल कारखानों,फैक्ट्रीयाँ स्थापित होती गई है, जंगल में रहनेवालों की आजीविका पर किस तरह पूंजीपतियों का आधिपत्य हो गया है, आदि सब कुछ परत–दर–परत मामा सोनकी कथा द्वारा उघडता गया है ।

जीवन संवेदनाओं पर अत्याचार करनेवाली उक्त कहानियों के साथ ही 'तीसरी चिट्‌ठी और 'लडोकन' जैसी कहानियाँ भी है, जो मानवीय संवेदनाओं को उद्वेनित भी करती हैं । 'तीसरी चिट्‌ठी' कहानी बढती उम्र की कुंआरी नडकियों की व्यथा–कथा कहती है । समस्याओं से जूझते परिवार के कुछ और भी संधान हुए हैं । 'कौन बनेगा उत्तराधिकारी' पिता–पुत्रों के संबंधो को नये सिरे से छानबीन करती है । पिता द्वारा तय की गई शर्त को जो पुत्र जितनी सफलता से पुरा करेगा उसी को सारी संपत्ति प्राप्त हो सकती है । इसमें चार पुत्रों के माध्यम से चार चरित्र को लेखक ने गढा है और जो सबसे असफल पुत्र हैं, वही सबसे सफल बना है । परिवार के जरिए कहानी युग सत्य को बयान करती है कि सफलता के पीछे अनैतिक कार्यों का योग है । पुत्र सत्यवीर के माध्यम से इस सत्य को उद्‌घाटित किया गया है । उनकी नजर में वे कोई गलत काम नहीं कर रहे हैं । दिन – रात खटते है । परिश्रम करते है, चोरी, डाका नहीं डाल रहे हैं । लेकिन दुनिया समाह की नजर में वो जो कार्य कर रहे हैं, कहानी के माध्यम से लेखक कहना चाहते है कि सफलता का मार्ग शॉर्टकट से नहीं गुजरता । स्वयं प्रकाश के लेखन की यही विशेषता है कि वे कोई ज्वलंत प्रश्न पाठकों के सामने अवश्य रखते है । आम आदमी

उनकी ऑखो से ओझल नहीं होने पाता ।

परिवार में स्वैच्छिक अवकाश प्राप्त व्यक्ति की पीडा 'कहॉ जाओगे बाबा' कहानी में उजागर हुई है । राम रतन जी रिटायरमेंट से पुर्व मकान बनवाते हैं । सोचते हैं अंतिम जिंदगी आराम से गुजर जाएगी । किंतु आये दिन के तबादले के कारण वे अपने मकान का सुख भी नहीं उठा पाते । ऐसे में मकान खाली रखना खतरे से खाली नहीं होता । यदि किराये पर उठाया तो मकान हडपे जाने का डर सताता है । दूर रहकर मकान की हिफाजत नहीं हो सकती । इन्हीं समस्याओं के कारण रामरतनजी बेटे नवीन को रहने के निए मकान देते हैं । उन्हें क्या मालूम था कि बेटा ही उनका मकान अपने नाम करवा लेगा । ऐसे में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का निर्ण उन्हें विचलित कर देता हैं । उन्हे 'वापसी' कहानी के गजाधर बाबू की याद अनायास ही आ जाती है । सेवानिवृत्त होने पर आदमी परिवार में कितना लाचार, बेकार और असहाय हो जाता है यह कहानी इसे सिद्रदत से रेखांकित करती है ।

एक तीसरा पारिवारिक मंजर 'मंजू फालतू' कहानी में है । यह नौकरी पेशा स्त्री की घुटन, टुटन और पीडा का मंजर है । संवेदनसिक्तता के ठीक विपरीत हैं जीवन में आयी तकनीकी यांत्रिकता । इसी बदलाव का अंकन है 'लाइलाज' काहनी ।इसी यांत्रिकता को महानगरीय संदर्भो में दिखाती है 'ट्रैफिक' कहानी । 'लडकियां क्या बाते कर रही थी ६ ' और 'बाबूलाल तेली की नाक' कहानिया सामाजिक संदर्भों में व्यक्ति की नियति पर प्रकाश डालती है । 'सुलझ हुआ आदमी' व्यक्ति के अंतर्विरोध पर प्रकाश डालत है । कहानी इस सत्य को उद्रघाटीत करती है कि जो पूंजीपति है, वे ही सर्वहरा बने हैं ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्वयं प्रकाश जी का यह कहानी संग्रह शिल्प की दृष्टी से कहानी नवीनता लिए हुए है । कहानी में जिस तरह से अतीत कथा का वर्तमान संदर्भो में प्रक्षेपण हुआ है वह बहुत बारीक कारीगरो का काम है । संवादों में सवीजता इतनी है, मानो हमारे सामने वे सब स्थितियॉ घटीत हो रही है । सबसे बडी विशेषता कहानी का विषय कुछ और होते हुए भी कहानीकार किसी भी ज्वलंत समस्या पर अपनी सोच कहानी में अनुस्यूत करता है ।

कुल मिलाकर कह सकते है कि संग्रह की समस्त कहानियां कथ्य में विश्वसनीयता एवं प्रभावोत्पादकता लिए हुए है । लेखक उच्चादशों और क्रांतिकारी चिंतन के अतिवाद से बचे हैं । यांत्रिक युग की त्रासदी में भी कहानी के चरित्र अपनी स्वाभाविकता लिए हुए हैं ।

ग्रंथ सूची:

1.एक ब्रेक के बादः अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2008
2.नई कहानी की भूमीका – कमलेश्वर, शब्द प्रकाशन दिल्ली 1976
3.नई कहानी दशा दिशा और संभावना श्री सुरेंद्र, अपोलो पब्लिकेशन जयपूर 1966
4.स्वातंत्रोत्तर हिंन्दी कहानी मे मानव– डॉ. हेतु पंचशील प्रकाशन जयपूर 1983
5.आलोचन 2007
6.सबरंग 13 जनवरी 2001

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net